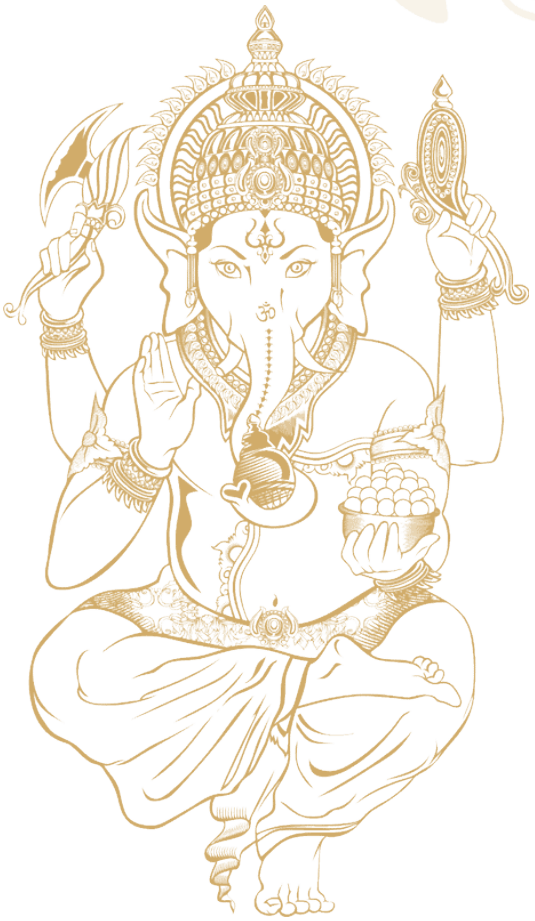

Sudha

10 Mar 1998

10:10 AM

Motihari

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121409001**

तिथि 10/03/1998 **समय** 10:10:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Motihari **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:49:49
अक्षांश 26:40:00 उत्तर **रेखांश** 84:55:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:09:40 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	21:30:19 घं
वेलान्तर	00:10:23 घं
सूर्योदय	06:05:47 घं
सूर्यास्त	17:56:02 घं
चैत्रादि संवत	2054
शक संवत	1919
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	13
नक्षत्र	आश्लेषा
योग	अतिगण्ड
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डू-डूंगरी
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	चंद्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

बुध 9वर्ष 5मा 20दि
शुक्र
29/08/2014
29/08/2034

शुक्र	29/12/2017
सूर्य	29/12/2018
चन्द्र	29/08/2020
मंगल	29/10/2021
राहु	29/10/2024
गुरु	30/06/2027
शनि	29/08/2030
बुध	29/06/2033
केतु	29/08/2034

योगिनी

भ्रामरी 2वर्ष 2मा 22दि
संकटा
01/06/2018
01/06/2026

संकटा	12/03/2020
मंगला	01/06/2020
पिंगला	10/11/2020
धान्या	12/07/2021
भ्रामरी	01/06/2022
भद्रिका	12/07/2023
उल्का	10/11/2024
सिद्धा	01/06/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			11:54:56	वृष	रोहिणी	1	चंद्र	राहु	---	0:00			
सूर्य			25:34:32	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.55	आत्मा	पितृ	मित्र
चंद्र			22:34:16	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	स्वराशि	1.22	भातृ	मातृ	जन्म
मंगल			10:26:13	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	सूर्य	मित्र राशि	1.20	ज्ञाति	भातृ	अतिमित्र
बुध			09:31:15	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	नीच राशि	0.87	कलत्र	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु		अ	14:15:47	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	सम राशि	1.20	मातृ	धन	वध
शुक्र			10:30:04	मक	श्रवण	1	चंद्र	चंद्र	मित्र राशि	1.30	पुत्र	कलत्र	प्रत्यारि
शनि			25:17:47	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	सम राशि	1.00	अमात्य	आयु	जन्म
राहु			16:44:35	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			16:44:35	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

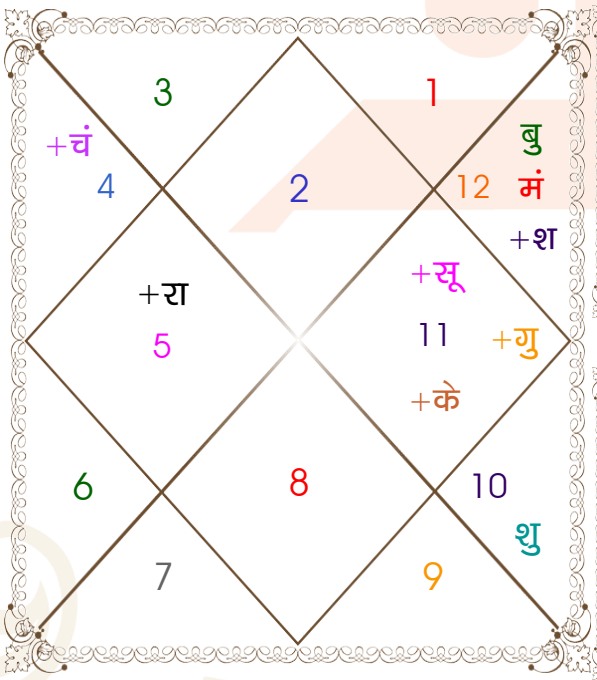

चन्द्र कुंडली

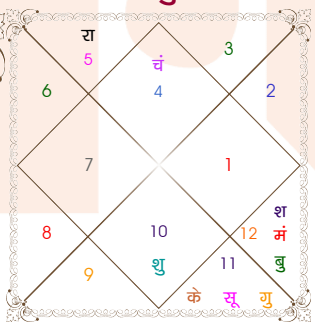

नवमांश कुंडली

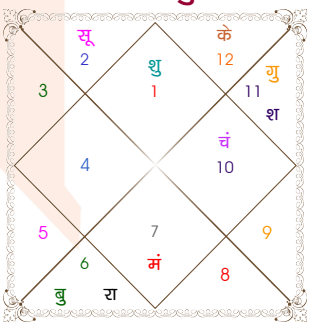

सर्वाष्टकवर्ग

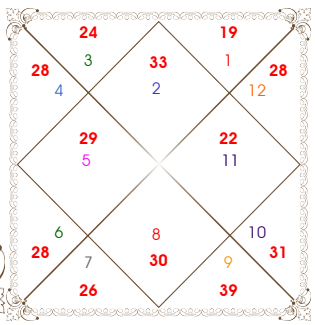

दशमांश कुंडली

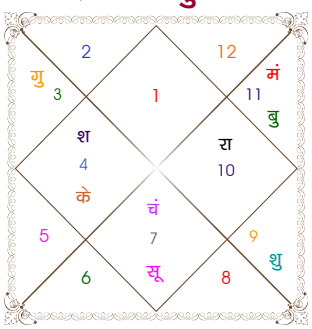

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

नक्षत्रफल

आप आश्लेषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ण विप्र, वर्ग श्वान, राक्षस गण तथा योनि मार्जार होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम "डु" से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों में की जाती हैं। क्योकि आपका जन्म इस नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः यह पिता के धन का नाशक होगा। अतः जन्म समय में इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से शान्ति करा लेनी चाहिए ऐसा करने से इसका अशुभ प्रभाव खत्म होगा तथा शुभ प्रभाव में वृद्धि होगी। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करने चाहिए। तथा 28वें दिन पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रो के दशांश का हवन करना चाहिए। इससे गण्डमूल का दोष प्रायः न्यून या समाप्त हो जाता है।

मंत्र - ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप इधर उधर घूमने तथा यात्रा करने में अपने समय को व्यतीत करने वाली होंगी। आप उग्र भावों से युक्त रहेंगी तथा कभी कभी अपनी इन उग्र चेष्टाओं के द्वारा जन सामान्य को व्यर्थ में ही परेशान करेंगी। धन का अभाव आपके पास नहीं रहेगा परन्तु अपने परिश्रम द्वारा अर्जित धन को भी आप अनावश्यक रूप से व्यय कर देंगी। विलासयुक्त जीवन व्यतीत करने को प्राथमिकता प्रदान करेंगी।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को वुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

लोलुपता का भाव भी नैसर्गिक रूप से आपके स्वभाव में दृष्टिगोचर होगा। दूसरे लोगों की वस्तुओं के प्रति आप आकषित रहेंगी। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा। आप अल्प मात्रा में कृतज्ञ होंगी तथा अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगी। साथ ही आप पहले किए गए कार्यों को करने वाली होंगी।

लुब्धः खञ्जः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।

आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।
जातक दीपिका

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगडा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यों को करने वाला होता है।

आप शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजनों का सानन्द भक्षण करेंगी। आपके कई कार्य कूरतापूर्ण होंगे फलतः सामाजिक जनों का आपके प्रति विशेष अच्छा भाव नहीं रहेगा। समयानुसार आप असत्य भाषण भी करेंगी सत्कार्यो में आपकी प्रवृति अल्प ही रहेगी तथापि इन्हें करने के लिए सदैव यत्नशील रहेंगी।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यों को करने वाला होता है।

ज्ञान प्राप्त करने में आपकी रूचि रहेगी तथा बुद्धि भी मध्यम होगी। क्रोध की मात्रा का आपमें आधिक्य रहेगा तथा आपके अधिकांश कार्य तेज से युक्त होंगे तथा सामाजिक जनों की तरफ से आपको मध्यम रूप से मान सम्मान अर्जित होगा। होगा। इसके अतिरिक्त आप कृतज्ञता से युक्त शब्दों का प्रयोग भी करती रहेंगी।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

कर्क राशि में उत्पन्न होने के कारण आप का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आपके समस्त कार्य कुशलता से सम्पन्न होंगे तथा अपने द्वारा अर्जित धन से आप समाज में धनाढ्य कहलाएंगी। पराकम के भाव की आप में पूर्णता रहेगी तथा अधिकांश लोग आपके प्रभाव को मानेंगे। धार्मिक भावना का समावेश प्रारम्भ से ही आप में रहेगा तथा यत्नपूर्वक आप धर्मानुपालन करेंगी। अपने गुरूजनों तथा अन्य सम्मानित संबंधियों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनका पूर्ण सहयोग तथा आर्शीवाद आपके साथ रहेगा। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीक्ष्ण होगी तथा बुद्धिमता से ही अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगी। कभी कभी आप बहुत क्रोधी तथा दुःखी भी हो जाएंगी। आप अच्छे मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगी तथा एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं की आप विशेषज्ञा होंगी। इसके साथ ही नर्बल अपने घर से अन्यत्र जाकर प्रवास करेंगी। चाहे वह स्थाई हो चाहे अस्थाई।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वकः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ से युक्त रहेगी तथा आपका स्वरूप अलौकिक सौन्दर्य युक्त तथा तेजस्वी रहेगा। धन का उपार्जन करने में आप स्वयं सक्षम होंगी तथा अन्य पर आश्रित नहीं रहेंगी। ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपकी श्रद्धा दर्शनीय तथा आदरणीय होंगी। कुलीन जनों के प्रति आपके मन में स्वाभाविक रूप से सेवा भाव रहेगा तथा इनकी सेवा तथा सहयोग के लिए तन मन धन से सर्वथा तत्पर रहेंगी।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों के अध्ययन में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। आपका चाल चलन उत्तम तथा प्रशंसनीय रहेगा। फूलों की सुगन्ध तथा जल क्रीड़ा की आप अत्यन्त शौकीन तथा प्रेमी होंगी। इसके साथ ही बुद्धिमता पूर्ण कार्यों से आप समाज में ख्याति तथा यश को प्राप्त करेंगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

पति को आप पूर्ण रूप से अपने वश में करने में सफलता प्राप्त करेंगी। जलविहार से आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी एवं हमेशा अच्छे मित्रों से युक्त रहेंगी। बहुत से भवनों का

आप निर्माण करने वाली होगी या आप के बहुत से मकान हो सकते हैं जिनकी आप स्वामिनी होंगी। आपका कद मध्यम रहेगा तथा वक्रगति से आप शीघ्र चलने वाली होंगी इसके अतिरिक्त पुत्र संतति भी आपकी अल्प मात्रा में ही रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार के द्रव्यों, सम्पतियों तथा सुखों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप ज्योतिष शास्त्र की ज्ञाता तथा प्रेमी होंगी। आपका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष से परिपूर्ण रहेगा। जीवन के उतार चढाव आपको देखने पड़ेंगे जिस प्रकार चन्द्रमा की कलाएं नित्य क्षयवृद्धि को प्राप्त होती हैं। उसी प्रकार आप भी उत्थान पतन से युक्त रहेंगी। आप स्नेह से अभिभूत होकर ही वश में होंगी दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ नही करवाया जा सकेगा। मित्रों को आप पूर्ण आदर तथा सहयोग प्रदान करेंगी फलस्वरूप आप अपने मित्रों में खूब प्रिय रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप जीवपालन, उद्यान, तालाब तथा बाग बगीचे के निर्माण कार्य में भी हमेशा तत्पर तथा रूचिशील रहेंगी।

आवकद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्स्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप सौभाग्यवती होंगी तथा अपने सौभाग्य के कारण अधिकांश कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आप धैर्यपूर्वक ही कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी उतावली या शीघ्रता आपकी प्रकृति के विपरीत होगा। आप अपने गृह सुख की प्राप्ति में सफल सिद्ध होंगी लेकिन आपके समय का अधिकांश भाग भ्रमण या यात्राओं में व्यतीत होगा। समाज के अन्य जनों से आप विनयशीलता का व्यवहार करेंगी तथा कृतज्ञता के सद्गुण से आप सुशोभित रहेंगी। आप राज्य में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित करेंगी। आप हमेशा सत्य तथा अन्य लोगों को कर्णप्रिय लगने वाली वाणी का ही प्रयोग करेंगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ की बातों को बोलने वाली होंगी। साथ ही मन में दया तथा करूणा का भाव मध्यम रहेगा। परन्तु आपके अधिकांश कार्य साहस से युक्त होंगे। छोटी छोटी बातों में उत्तेजित होना तथा क्रोधित होना आपकी सामान्य

प्रवृति रहेगी। अपने कार्य सिद्धि के लिए आप कोई भी कार्य करने के लिए तत्पर रहेंगी। शारीरिक शक्ति की आप में कमी नहीं रहेगी अपितु पूर्ण रहेगी। इसके अतिरिक्त बात बात पर उत्तेजित होना तथा अन्य जनों से वाद विवाद करना आपके लिए सामान्य बात होगी। इस प्रकार अन्य लोगों से आपका सामान्यतया वैमनस्य का ही भाव रहेगा। अतः अन्य जनों से आपका संयम पूर्वक वार्तालाप करना चाहिए।

आप प्रमेह तथा उन्माद रोग से भी पीड़ित हो सकती हैं। आपके चेहरे की सुन्दरता भी सामान्य ही होगी तथा आप कभी कभी कठोर शब्दों का भी अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न से रहेंगे। अतः मधुर शब्दों का आपको यत्नपूर्वक प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही कोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप वीरता के गुणों से सुसम्पन्न होंगी तथा अपने कार्यों को पूर्ण करने में चतुराई का प्रदर्शन करेंगी। मीठा भोजन तथा मीठा पेय आपका प्रिय कार्य होगा तथा इनके सेवन से आप अलौकिक आनन्द तथा शान्ति की अनुभूति करेंगी। आप में भय का सर्वथा अभाव रहेगा। बिना किसी भय के जीवन पथ पर अग्रसर होकर उन्नति को प्राप्त होंगी लेकिन कभी कभी आपके स्वभाव में कुटिलता का भाव आ जाएगा अतः आप कठोरकर्मों की ओर अग्रसर होंगी।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों

से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अजित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायी हैं। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण आदि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा सफलता प्राप्त नहीं होगी तथा हानि का योग बनेगा। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र चढ़ाने चाहिए तथा सोमवार का उपवास भी करना चाहिए। इसके साथ ही श्वेत मोती,चांदी, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प,चावल इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम

10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।